(IJRSSH) 2018, Vol. No. 8, Issue No. I, Jan-Mar **e-ISSN: 2249-4642, p-ISSN: 2454-4671**

महाकाव्य : भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक लोकाचार के प्रतिबिंबित साक्ष्य

डॉ0 विनीता रानी

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग

के0 जी0 के0 पी0 जी0 कॉलेज, मुरादाबाद उत्तर प्रदेश

EPICS: REFLECTIVE EVIDENCE OF THE CULTURAL, SOCIAL AND SPIRITUAL ETHOS OF INDIA

Dr. Vineeta Rani

Associate Professor, Department of Hindi
KGK(PG) College, Moradabad, Uttar Pradesh

ABSTRACT

The origins and development of Hindi literature epics can be traced back to ancient Indian literary traditions, especially Sanskrit literature. Hindi as a language has its roots in Sanskrit dating back to the 9th century CE. emerged as a distinct literary language around. The epics of Hindi literature draw inspiration from India's rich mythological and cultural heritage while incorporating local regional influences.

- *Sanskrit Influence: Sanskrit epics, Ramayana and Mahabharat's Hindi literature have been greatly influenced by the development of epics. In ancient texts, they served as the foundation for telling stories and provided themes, letters and narrative structures that were adapted and reimagined in Hindi epics. The classical stories of Ram, Sita, Krishna and Arjuna became the center of Hindi literary tradition.*

- *Bhakti or Sufi traditions: The Bhakti and Sufi movements that emerged in medieval India also played an important role in shaping Hindi literary epics. Bhakti poets like Kabir, Tulsidas and Surdas have created devotional poetry which glorifies the divine love of the devotee or the divine. His works like Tulsidas's Ramcharitmanas and Surdas's Surdas Ramayana are considered epics in themselves.*

- *Folklore and Oral Traditions: Hindi literary epics often incorporate elements of folk songs and oral traditions, who are attracted by the diverse cultural heritage of different regions of India. Local Folk tales, legends and oral accounts were woven into the fabric of Hindi epics, which added a different flavor and regional touch to the storytelling. This integration of folklore helped to relate the epics to the lives and experiences of the common people.*

- *Colonial Encounter and Western Influence: During the period of innovation, India came in contact with western literary traditions and ideas. The influence of this encounter also fell on Hindi literature, the genre of epics. Some Hindi writers began experimenting with narrative techniques and literary styles influenced by Western literature. He explored new themes and employed techniques such as realism, psychological introspection and social criticism in his epics.*

However, it is important to keep in mind that the West has a lot of influence, Hindi literature epics are mainly rooted in indigenous traditions and cultural contexts. The basic themes, characters and narrative structure are largely derived from Indian mythology, religious beliefs and historical events. Hindi literary epics continue to reflect the cultural, social and spiritual ethos of India, while also developing and responding to contemporary concerns.

Finally, the origin and development of Hindi literature epics can be traced back to ancient Indian literary traditions, which has influence from Sanskrit epics, Bhakti and Sufi movements and Local folklore. While there may have been some contact with Western literary ideas during the colonial period, India's original or vivid literature is reflected in the face of Hindi literature, which have been linked to indigenous traditions and cultural contexts.

सारांश

हिंदी साहित्य महाकाव्यों की उत्पत्ति और विकास प्राचीन भारतीय साहित्यिक परंपराओं, विशेष रूप से संस्कृत साहित्य में देखा जा सकता है। एक भाषा के रूप में हिंदी की जड़ें संस्कृत में हैं और 9वीं शताब्दी सीई के आसपास एक विशिष्ट साहित्यिक भाषा के रूप में उभरी। हिंदी साहित्य के महाकाव्य स्थानीय क्षेत्रीय प्रभावों को समाहित करते हुए भारत की समृद्ध पौराणिक और सांस्कृतिक विरासत से प्रेरणा लेते हैं।

- *संस्कृत प्रभावः संस्कृत महाकाव्यों, रामायण और महाभारत का हिंदी साहित्य महाकाव्यों के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इन प्राचीन ग्रंथों ने कहानी कहने की नींव के रूप में कार्य किया और विषयों, पात्रों और कथा संरचनाओं को प्रदान किया जिन्हें हिंदी महाकाव्यों में अनुकूलित और पुनर्कल्पित किया गया था। राम, सीता, कृष्ण और अर्जुन की कालातीत कहानियाँ हिंदी साहित्य परंपरा का केंद्र बन गईं।*
- *भक्ति और सूफी परंपराएंः मध्यकालीन भारत में उभरे भक्ति और सूफी आंदोलनों ने भी हिंदी साहित्य महाकाव्यों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कबीर, तुलसीदास, और सूरदास जैसे भक्ति कवियों ने भक्ति कविता की रचना की जिसने दिव्य प्रेम का जश्न मनाया और भक्त और परमात्मा के बीच व्यक्तिगत और भावनात्मक संबंध पर जोर दिया। तुलसीदास की रामचरितमानस और सूरदास की सूरदास रामायण जैसी उनकी रचनाएँ अपने आप में महाकाव्य मानी जाती हैं।*
- *लोकसाहित्य और मौखिक परंपराएंः हिंदी साहित्य महाकाव्यों में अक्सर लोकगीतों और मौखिक परंपराओं के तत्व शामिल होते हैं, जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों की विविध सांस्कृतिक विरासत से आकर्षित होते हैं। स्थानीय लोक कथाओं, किंवदंतियों और मौखिक आख्यानों को हिंदी महाकाव्यों के ताने–बाने में बुना गया था, जो कहानी कहने के लिए एक अलग स्वाद और क्षेत्रीय स्पर्श जोड़ते थे। लोककथाओं के इस एकीकरण ने महाकाव्यों को आम लोगों के जीवन और अनुभवों से जोड़ने में मदद की।*
- *औपनिवेशिक मुठभेड़ और पश्चिमी प्रभावः औपनिवेशिक काल के दौरान, भारत पश्चिमी*

साहित्यिक परंपराओं और विचारों के संपर्क में आया। इस मुठभेड़ का प्रभाव महाकाव्यों की विधा सहित हिंदी साहित्य पर भी पड़ा। कुछ हिंदी लेखकों ने पश्चिमी साहित्य से प्रभावित कथा तकनीकों और साहित्यिक शैलियों के साथ प्रयोग करना शुरू किया। उन्होंने अपने महाकाव्यों में नए विषयों और नियोजित तकनीकों जैसे यथार्थवाद, मनोवैज्ञानिक आत्मनिरीक्षण और सामाजिक समालोचना की खोज की।

हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि जहाँ पश्चिम का कुछ प्रभाव हो सकता है, हिंदी साहित्य महाकाव्य मुख्य रूप से स्वदेशी परंपराओं और सांस्कृतिक संदर्भों में निहित रहे हैं। मूल विषय, चरित्र और कथा संरचना काफी हद तक भारतीय पौराणिक कथाओं, धार्मिक विश्वासों और ऐतिहासिक घटनाओं से ली गई हैं। हिंदी साहित्य महाकाव्य भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक लोकाचार को प्रतिबिंबित करना जारी रखते हैं, जबकि समकालीन चिंताओं का विकास और प्रतिक्रिया भी करते हैं।

अंत में, हिंदी साहित्य महाकाव्यों की उत्पत्ति और विकास को प्राचीन भारतीय साहित्यिक परंपराओं में देखा जा सकता है, जिसमें संस्कृत महाकाव्यों, भक्ति और सूफी आंदोलनों और स्थानीय लोककथाओं का प्रभाव है। जबकि औपनिवेशिक काल के दौरान पश्चिमी साहित्यिक विचारों के साथ कुछ संपर्क हो सकता है, हिंदी साहित्य महाकाव्य मुख्य रूप से भारत की अनूठी और विविध साहित्यिक विरासत को प्रदर्शित करते हुए स्वदेशी परंपराओं और सांस्कृतिक संदर्भों से जुड़े रहे हैं।

परिचय

इस भूमण्डल पर सर्वाधिक प्राचीन कही जाने वाली यही आर्यों की गीर्वाणवाणी है। संस्कृत साहित्य भारत का राष्ट्रीय गौरव है, वह भारतीय संस्कृति का निर्मल दर्पण है। उसमें हमे अपने गौरवमय अतीत की झाँकी देखने को मिलती है। भारतीय काव्य के निर्माण की पूर्व प्रेरणा कवियों को रामायण तथा महाभारत जैसे महनीय महाकाव्यों के अध्ययन से प्राप्त हुई। कालिदास एवं परवर्ती काव्यकार, भावपक्ष की अपेक्षा कला पक्ष उदात्त यह शैली रामायण, महाभारत, कालिदास, अश्वघोष आदि के काव्यों में प्राप्त होती है यह शैली भारवि, माघ, श्रीहर्ष आदि के काव्यों में प्राप्त होती है। यह शैली द्वयर्थक काव्यों में प्राप्त होती है।

महाकाव्यों का उद्भव ऋग्वेद के आख्यान सूक्तों– इन्द्र, वरुण, विष्णु और उषा आदि के स्तुति मन्त्रों तथा नराशंसी गाथाओं से हुआ है। ब्राह्मण आदि ग्रन्थों में इन आख्यान आदि का वृहद रूप मिलता है। यही स्वरूप आगे चलकर महाकाव्य के रूप में परिवर्तित हो गया। क्रौंच वध से खिन्न मन वाले महाकवि वाल्मीकि के वाणी से प्रस्फुटित व्याध्या–शाप (मा निषाद प्रतिष्ठा त्वम) वाल्मीकि कृत रामायण के रूप में आदिकाव्य के गौरव को प्राप्त कर लिया, तथा इसके रचयिता महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि का गौरव प्राप्त हुआ। वाल्मीकि रामायण काव्यरूपी गंगोत्री का उद्गम है जहाँ से विभिन्न कवियों को काव्यस्रोतस्विनी रूपी मन्दाकिनी अविरल प्रवाहित हो रही है। रामायण के बाद वेदव्यास कृत महाभारत भी परवर्ती कवियों का उपजीव्य काव्य बन गया। रामायण और महाभारत आगे चलकर परवर्ती काव्यों और महाकाव्यों के लिए उपजीव्य ग्रन्थ हो गये।

रामायण और महाभारत के प्रणयन के उपरान्त प्राप्त होने वाले विपुल महाकाव्य साहित्य के बीज वैदिक साहित्य में खोजना व्यर्थ सा ही है। किन्तु भारतीय परम्परा वेद को ही प्रत्येक शास्त्र काव्य आदि का उत्पत्ति स्थल मानती रही है। वैदिक ऋषि की सर्वाधिक मनोहर कल्पनाएं ऋग्वेद के उषस् सूक्तों में समस्त काव्यात्मक उन्मेष के साथ प्रस्फुटित हुई है।4 देवस्तुति के अतिरिक्त नराशंसियों में भी काव्यस्वरूप झलकता है। तत्कालीन उदार दानी राजाओं की प्रशंसा में नितान्त

अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशस्तियाँ ही नराशंसी कहलाती है। 'ऐतरेय ब्राह्मण' की सप्तम पंचिका में 'शुनः शेप आख्यान' एवं अष्टम पंचिका में 'ऐन्दमहाभिषेक' के अनेक अंश सुन्दर काव्य ही छटा बिखेरते हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में काव्य तत्वों का अस्तित्व तो दृष्टिगोचर होता है किन्तु महाकाव्य शैली का पूर्ण परिपाक कहीं प्राप्त नहीं होता है। संस्कृत महाकाव्य धारा का मूल उद्‌गम स्थल आदिकाव्य रामायण ही है, जिसमें महाकाव्य की सभी प्रवृत्तियों का सम्यक् दर्शन हो जाता है। सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य पर इस आदिकाव्य का दाय प्रत्येक साहित्यानुरागी को विदित ही है।

संस्कृत साहित्य के महाकाव्यों के विकास परम्परा में संस्कृत व्याकरण के 'मुनित्रय' पाणिनि, वररूचि तथा पतंजलि का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।5 आचार्य रुद्रट कृत 'काव्यालंकार सूत्र' के टीकाकार नेमिसाधु ने पाणिनी के द्वारा रचित महाकाव्य 'जाम्बवतीजय' या 'पातालविज' का उल्लेख किया है। पतंजलि के महाभाष्य (ईस्वी पूर्व द्वितीय शती) में काव्यगुणों से सम्पन्न पद्य उपलब्ध है। इन प्रमाणों के आधार पर महाकाव्य का उदय ईस्वी पूर्व की अष्टम शती में ही पाणिनी द्वारा हो चुका था। सूक्तिग्रन्थों में 'राजशेखर' ने पाणिनी को व्याकरण तथा 'जाम्बवतीजय' दोनों का रचयिता माना है।

''नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविरभूदिह।

आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतीजयम।

बल्कि इससे भी प्राचीन 'सदुक्तिकर्णमृत' में वररूचि कृत श्लोकों की उपलब्धि होती है। पतंजलि ने वररूचि के बनाये हुए किसी काव्यग्रन्थ (वाररूचं काव्यं) का उल्लेख महाभारत में किया है।

''यथार्थता कथं नाम्नि मा भूद वररूचेरिह।

व्यधत्त कण्ठाभरणं यः सदारोहणप्रियः।।''

वररूचि कृत महाकाव्य का नाम 'कण्ठाभरण' है। वररूचि ने पाणिनी का अनुसरण 'वार्तिक' लिख कर ही नहीं किया प्रत्युत, काव्य रचना से भी उसकी पूर्ति की।' 'छन्दशास्त्र' के अनुशीलन से भी महाकाव्य की प्राचीनता विषदरूपेण प्रमाणित होती है। काव्य अपने रूचिर निर्माण तथा रचना के निमित्त शान्त वातावरण, आर्थिक समृद्धि तथा सामाजिक शान्ति की जितनी अपेक्षा रखता है उतनी ही वह किसी गुणग्राही आश्रयदाता की प्रेरणा की भी।

प्राचीन भारतवर्ष के इतिहास में वह युग शकों के भयंकर आक्रमणों से भारतीय जनता, धर्म तथा संस्कृति के रक्षक मालव संवत के ऐतिहासिक संस्थापक शकारि मालवगणाध्यक्ष विक्रमादित्व का है।9 कालिदास को ही वस्तुतः प्रौढ़ परिष्कृत, प्रांजल एवं मनोज्ञ काव्य शैली का प्रवर्तक कहा जा सकता है।10 उन्होंने जो आदर्श उपस्थित किया वह परकालिन कवियों एवं महाकवियों के लिए अनुकरणीय हुए।

संस्कृत महाकाव्य के विकास को तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है।

1. *कालिदास के पहले का समय जिसमे कथानक की प्रधानता रही। रामायण और महाभारत इस समय के आदर्श काव्य है।*

2. *कालिदास का समय जिसमे आडम्बरों में रहित, सहज एवं सरल ढंग से भाव तथा कला*

का मंजुल समन्वय स्थापित करके काव्य की धारा प्रवाहित हुई। जैसे– 'रघुवंशम' और कुमारसम्भवम्' इत्यादि।

3. *कालिदास के बाद का समय जिसमें काव्य लेखन भाषा और भाव की दृष्टि से क्लिष्ट होता हुआ दिखाई पड़ता है जिसकी परम्परा 'भारवि' से शुरू होकर 'श्रीहर्ष' की रचना तक अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है और एक वैदग्ध तथा पाण्डित्यपूर्ण परम्परा का निर्माण होता है।*

इतिहासकार और महाभारत

यदि आप इस आलेख के स्रोतों की ओर गौर करें तो आप पाएगे कि इतिहासकार किसी ग्रंथ का विश्लेषण करते समय अनेक पहलुओं पर विचार करते हैं तथा इस बात का परीक्षण करते हैं कि ग्रंथ किस भाषा में लिखा गया : पालि, प्राकृत अथवा तमिल, जो आम लोगों द्वारा बोली जाती थी अथवा संस्कृत जो विशिष्ट रूप से पुरोहितों और खास वर्ग द्वारा प्रयोग में लाई जाती थी। इतिहासकार ग्रंथ के प्रकार पर भी ध्यान देते हैं। क्या यह ग्रंथ 'मंत्र' थे जो अनुष्ठानकर्ताओं द्वारा पढ़े और उच्चरित किए जाते थे अथवा ये 'कथा' ग्रंथ थे जिन्हें लोग पढ़ और सुन सकते थे तथा दिलचस्प होने पर जिन्हें दुबारा सुनाया जा सकता था? इसके अलावा इतिहासकार लेखक के बारे में भी जानने का प्रयास करते हैं जिनके दृष्टिकोण और विचारों ने ग्रंथों को रूप दिया।

इन ग्रंथों के श्रोताओं का भी इतिहासकार परीक्षण करते हैं क्योंकि लेखकों ने अपनी रचना करते समय श्रोताओं की अभिरुचि पर ध्यान दिया होगा। इतिहासकार ग्रंथ के संभावित संकलन–रचना काल और उसकी रचनाभूमि का भी विश्लेषण करते हैं। इन सब मुद्दों का जायजा लेने के बाद ही इतिहासकार किसी भी ग्रंथ की विषयवस्तु का इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए इस्तेमाल करते हैं। महाभारत जैसे विशाल और जटिल ग्रंथ के संदर्भ में, आप कल्पना कर सकते हैं कि यह कार्य कितना कठिन होगा।

भाषा एवं विषयवस्तु

अब हम ग्रंथ की भाषा की ओर देखते हैं। महाभारत का जो पाठ हम इस्तेमाल कर रहे हैं वह संस्कृत में है यद्यपि अन्य भाषाओं में भी इसके संस्करण मिलते हैं। किन्तु महाभारत में प्रयुक्त संस्कृत वेदों अथवा प्रशस्तियों में वर्णित संस्कृत से कहीं अधिक सरल है। अतरू यह संभव है कि इस ग्रंथ को व्यापक स्तर पर समझा जाता था। इतिहासकार इस ग्रंथ की विषयवस्तु को दो मुख्य शीर्षकों आख्यान तथा उपदेशात्मक–के अंतर्गत रखते हैं। आख्यान में कहानियों का संग्रह है और उपदेशात्मक भाग में सामाजिक आचार–विचार के मानदंडों का चित्रण है। किन्तु यह विभाजन पूरी तरह अपने में एकांकी नहीं है–उपदेशात्मक अंशों में भी कहानिया होती हैं और बहुधा आख्यानों में समाज के लिए एक सबक निहित रहता है।

अधिकतर इतिहासकार इस बात पर एकमत हैं कि महाभारत वस्तुत: एक भाग में नाटकीय कथानक था जिसमें उपदेशात्मक अंश बाद में जोड़े गए। आरंभिक संस्कृत परंपरा में महाभारत को 'इतिहास' की श्रेणी में रखा गया है। इस शब्द का अर्थ है : 'ऐसा ही था।' क्या महाभारत में, सचमुच में हुए किसी यद्ध का स्मरण किया जा रहा था? इस बारे में हम निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकते। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि स्वजनों के बीच हुए युद्ध की स्मृति ही महाभारत का मुख्य कथानक है। अन्य इस बात की ओर इंगित करते हैं कि हमें युद्ध की पुष्टि किसी और साक्ष्य से

नहीं होती।

सदृशता की खोज

महाभारत में अन्य किसी भी प्रमुख महाकाव्य की भाति युद्धों, वनों,राजमहलों और बस्तियों का अत्यंत जीवंत चित्रण है। 1951–52 में पुरातत्ववेत्ता बी बी लाल ने मेरठ जिले के उप्र के हस्तिनापुर नामक एक गाँव में उत्खनन किया। क्या यह गाँव महाकाव्य में वर्णित हस्तिनापुर था? हालाकि नामों की समानता मात्र एक संयोग हो सकता है किन्तु गंगा के ऊपरी दोआब वाले क्षेत्र में इस पुरास्थल का होना जहाँ कुरु राज्य भी स्थित था, इस ओर इंगित करता है कि यह पुरास्थल कुरुओं की राजधानी हस्तिनापुर हो सकता है ।

प्राचीन भारत के इतिहास की जानकारी के साधनों को दो भागों में बाँटा जा सकता है–साहित्यिक साधन और पुरातात्विक साधन, जो देशी और विदेशी दोनों हैं। साहित्यिक साधन दो प्रकार के हैं–धार्मिक साहित्य और लौकिक साहित्य। धार्मिक साहित्य भी दो प्रकार के हैं–ब्राह्मण ग्रन्थ और अब्राह्मण ग्रन्थ। ब्राह्मण ग्रन्थ दो प्रकार के हैं–श्रुति जिसमें वेद ब्राह्मण उपनिषद इत्यादि आते हैं और स्मृति जिसके अन्तर्गत रामायण महाभारत पुराण स्मृतियाँ आदि आती हैं। लौकिक साहित्य भी चार प्रकार के हैं–ऐतिहासिक साहित्य विदेशी विवरण, जीवनी और कल्पना प्रधान तथा गल्प साहित्य।

वैदिक साहित्य के उत्तर में रामायण और महाभारत नामक दो महाकाव्य साहित्य का प्रणयन हुआ। सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य में ये दोनों महाकाव्य अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। रामायण की रचना महर्षि बाल्मीकि ने की जिसमें अयोध्या की रामकथा है। इसमें राज्य सीमा, यवनों और शकों के नगर, शासन कार्य रामराज्य आदि का वर्णन है। मूल महाभारत का प्रणयन व्यास मुनि ने किया। महाभारत का वर्तमान रूप प्राचीन इतिहास कथाओं उपदेशों आदि का भण्डार है। इस ग्रन्थ से भारत की प्राचीन सामाजिक तथा धार्मिक अवस्थाओं पर प्रकाश पड़ता है। इन दोनों महाकाव्यों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे आर्य संस्कृति के दक्षिण में प्रसार का निर्देश करते हैं। रामायण में तत्कालीन पौर जनपदों और महाभारत से 'सुधमां' और 'देवसभा' का हमें जो ज्ञान प्राप्त हुआ है, उससे पता चलता है कि राजा किस सीमा तक स्वेच्छाचारी था और कहां तक उसके प्रभाव और कार्य की सीमायें इन राजनीतिक संस्थाओं तथा प्रजा प्रतिनिधित्व द्वारा परिमित थी।

विदेशी विवरण

देशी लेखकों के अतिरिक्त विदेशी लेखकों के साहित्य से भी प्राचीन भारत के इतिहास पृष्ठ निर्मित किये गये हैं। अनेक विदेशी यात्रियों एवं लेखकों ने स्वयं भारत की यात्रा करके या लोगों से सुनकर भारतीय संस्कृति में ग्रन्थों का प्रणयन किया है। इनमें यूनान, रोम, चीन, तिब्बत, अरब आदि देशों के यात्री शामिल हैं। यूनानियों के विवरण सिकन्दर के पूर्व, उसके समकालीन तथा उसके पश्चात की परिस्थितियों से संबंधित हैं। स्काइलेक्स पहला यूनानी सैनिक था जिसने सिन्धु नदी का पता लगाने के लिए अपने स्वामी डेरियस प्रथम के आदेश से सर्वप्रथम भारत की भूमि पर कदम रखा था। इसके विवरण से पता चलता है कि भारतीय समाज में उच्चकुलीन जनों का काफी सम्मान था। हेकेटियस दूसरा यूनानी लेखक था जिसने भारत और विदेशों के बीच कायम हुए राजनीतिक संबंधों की चर्चा की है। हेरोडोटस जो एक प्रसिद्ध यूनानी लेखक था, ने यह लिखा है कि भारतीय युद्ध प्रेमी थे। इसी लेखक के ग्रन्थ से यह भी पता चलता है कि भारत का उत्तरी तथा पश्चिमी देशों से मधुर संबंध था। टेसियस ईरानी सम्राट जेरेक्सस का वैद्य था जिसने सिकन्दर के पूर्व के भारतीय समाज के संगठन रीति रिवाज, रहन–सहन इत्यादि का वर्णन किया है। पर

इसके विवरण अधिकांशतः कल्पना प्रधान और असत्य हैं।

सिकन्दर के समय में भी ऐसे अनेक लेखक थे जिन्होंने भारत के संबंध में ग्रन्थों की रचना की। ये लेखक सिकन्दर के भारत पर आक्रमण के समय ही उसके साथ भारतवर्ष आये थे। इनमें अरिस्टोबुलस, निआर्कस, चारस, यूमेनीस आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। सिकन्दर के पश्चात् कालीन यात्रियों और लेखकों में मेगास्थनीज, प्लनी, तालिमी, डायमेकस, डायोडोरस, प्लूटार्क, एरियन, कर्टियस, जस्टिन, स्ट्रेबो आदि के नाम उल्लेख मेगास्थनीज यूनानी शासक सेल्यूकस की ओर से राजदूत के रूप में चन्गुप्त मौर्य के दरबार में आया था। इसकी 'इण्डिका' भारतीय संस्थाओं भूगोल समाज के वर्गीकरण, पाटलिपुत्र आदि के संबध में प्रचुर सामग्रियाँ देती हैं। यद्यपि इस ग्रन्थ का मूल रूप अप्राप्य है, पर इसके उद्धरण अनेक लेखकों के ग्रन्थों में आये हैं। डायमेकस राजदूत के रूप में बिन्दुसार के दरबार में कुछ दिनों तक रहा जिसने अपने समय की सभ्यता तथा राजनीति का उल्लेख किया है। इस लेखक की भी मूल पुस्तक अनुपल्बध है तामली ने भारतीय भूगोल की रचना की। प्लिनी ने अपने 'प्राकृतिक इतिहास' में भारतीय पशुओं, पौधों, खनिज आदि का वर्णन किया। इसी प्रकार एरेलियन के लेख तथा कर्टियस, जस्टिन और स्ट्रेबो के विवरण भी प्राचीन भारत इतिहास के अध्ययन की सामग्रियाँ प्रदान करते हैं। 'इरिथियन' सागर का पेरिप्लस' नाम ग्रंथ जिसके रचयिता का नाम अज्ञात है, भारत के वाणिज्य के संबंध में ज्ञान देता है।

महाभारत काल में भारतीयों का विदेशों से संपर्क

महाभारत का युद्ध और महाभारत ग्रंथ की रचना का काल अलग अलग रहा है। इससे भ्रम की स्थिति उत्पन्न होने की जरूरत नहीं। यह सभी और से स्थापित सत्य है कि भगवान श्रीकृष्ण का जन्म रोहिणी नक्षत्र तथा अष्टमी तिथि के संयोग से जयंती नामक योग में लगभग 3112 ईसा पूर्व को हुआ हुआ। भारतीय खगोल वैज्ञानिक आर्यभ7 के अनुसार महाभारत युद्ध 3137 ईसा पूर्व में हुआ और कलियुग का आरम्भ कृष्ण के निधन के 35 वर्ष पश्चात हुआ। महाभारत काल वह काल है जब सिंधुघाटी की सभ्यता अपने चरम पर थी।

ऋषि गर्ग को यवनाचार्य कहते थे। यह भी कहा जाता है कि अर्जुन की आदिवासी पत्नी उलूपी स्वयं अमेरिका की थी। धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी कंदहार और पांडु की पत्नी मौ ईरान के राजा सेल्यूकस (शल्य) की बहिन थी। ऐसे उल्लेख मिलता है कि एक बार मुनि वेद व्यास और उनके पुत्र शुकदेव आदि जो अमेरिका मैं थे। शुक ने पिता से कोई प्रश्न पूछा। व्यास जी इस बारे मैं चूंकि पहले बता चुके थे, अत उन्होंने उत्तर न देते हुए शुक को आदेश दिया कि शुक तुम मिथिला (नेपाल) जाओ और यही प्रश्न राजा जनक से पूछना। तब शुक अमेरिका से नेपाल जाना पड़ा था। कहते हैं कि वे उस काल के हवाई जहाज से जिस मार्ग से निकले उसका विवरण एक सुन्दर श्लोक में है –

मेरोहर्रेश्च द्वे वर्षे हेमवँते ततः।

क्रमेणेव समागम्य भारतं वर्ष मासदत।।

सदृष्टवा विविधान देशान चीन हूण निषेवितान।

अर्थात शुकदेव अमेरिका से यूरोप (हरिवर्ष, हूण) होकर चीन और फिर मिथिला पहुंचे। पुराणों हरि बंदर को कहा है, वर्ष माने देश, बंदर लाल मुंह वाले होते हैं, यूरोपवासी के मुंह लाल होते हैं। अतः हरिवर्ष को यूरोप कहा है। हूणदेश हंगरी है यह शुकदेव के हवाई जहाज का मार्ग था।...

अमेरिकन महाद्वीप के बोलीविया (वर्तमान में पेरू और चिली) में हिन्दुओं ने प्राचीनकाल में अपनी बस्तियां बनाईं और कृषि का भी विकास किया। यहां के प्राचीन मंदिरों के द्वार पर विरोचन, सूर्य द्वार, चन्द्र द्वार, नाग आदि सब कुछ हिन्दू धर्म समान हैं। जम्बू द्वीप के वर्ण में अमेरिका का उल्लेख भी मिलता है। पारसी, यजीदी, पैगन, सबाईन, मुशरिक, कुरैश आदि प्रचीन जाति को हिन्दू धर्म की प्राचीन शाखा माना जाता है। ऋग्वेद में सात पहियों वाले हवाई जहाज का भी वर्णन है।

– सोमा पूषण रजसो विमानं सप्तचक्रम् रथम् विश्वार्भन्वम।

इसके अलावा ऋग्वेद संहिता में पनडुब्बी का उल्लेख भी मिलता है,

यास्ते पूषन्नावो अन्तरूसमुे हिरण्मयी रन्तिरिक्षे चरन्ति।

ताभिर्यासि दूतां सूर्यस्यकामेन कृतश्रव इच्छभानरूष।

श्रीकृष्ण और अर्जुन अग्नि यान (अश्वतरी) से समुद्र द्वारा उद्धालक ऋषि को आर्यावर्त लाने के लिए पाताल गए। भीम, नकुल और सहदेव भी विदेश गए थे। अवसर था युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ का। यह महान ऋषियोँ और राजाओँ को निमंत्रण देने गए। यह लोग चारों दिशाओं में गए। कृष्ण–अर्जुन का अग्नियान अति आधुनिक मोटर वोट थी। कहते हैं कि कृष्ण और बलराम एक बोट के सहारे ही नदी मार्ग से बहुत कम समय में मथुरा से द्वारिका में पहुंच जाते थे।

महाभारत में अर्जुन के उत्तर–कुरु तक जाने का उल्लेख है। कुरु वंश के लोगों की एक शाखा उत्तरी ध्रुव के एक क्षेत्र में रहती थी। उन्हें उत्तर कुरु इसलिए कहते हैं, क्योंकि वे हिमालय के उत्तर में रहते थे। महाभारत में उत्तर–कुरु की भौगोलिक स्थिति का जो उल्लेख मिलता है वह रूस और उत्तरी ध्रुव से मिलता–जुलता है। हिमालय के उत्तर में रशिया, तिब्बत, मंगोल, चीन, किर्गिस्तान, कजाकिस्तान आदि आते हैं। अर्जुन के बाद बाद सम्राट ललितादित्य मुक्तापिद और उनके पोते जयदीप के उत्तर कुरु को जीतने का उल्लेख मिलता है।

अर्जुन के अपने उत्तर के अभियान में राजा भगदत्त से हुए युद्ध के संदर्भ में कहा गया है कि चीनियों ने राजा भगदत्त की सहायता की थी। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ सम्पन्न के दौरान चीनी लोग भी उन्हें भेंट देने आए थे। महाभारत में यवनों का अनेका बार उल्लेख हुआ है। संकेत मिलता है कि यवन भारत की पश्चिमी सीमा के अलाव मथुरा के आसपास रहते थे।

यवनों ने पुष्यमित्र शुंग के शासन काल में भयंकर आक्रमण किया था। कौरव पांडवों के युद्ध के समय यवनों का उल्लेख कृपाचार्य के सहायकों के रूप में किया गया है। महाभारत काल में यवन, म्लेच्छ और अन्य अनेकानेक अवर वर्ण भी क्षत्रियों के समकक्ष आदर पाते थे। महाभारत काल में विदेशी भाषा के प्रयोग के संकेत भी विद्यमान हैं। कहते हैं कि विदुर लाक्षागृह में होने वाली घटना का संकेत विदेशी भाषा में देते हैं।

महाभारत में उल्लेख मिलता है कि नकुल में पश्चिम दिशा में जाकर हूणों को परास्त किया था। युद्धिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ सम्पन्न करने के बाद हूण उन्हें भेंट देने आए थे। उल्लेखनीय है कि हूणों ने सर्वप्रथम स्कन्दगुप्त के शासन काल (455 से 467 ईस्वी) में भारत के भितरी भाग पर आक्रमण करके शासन किया था। हूण भारत की पश्चिमी सीमा पर स्थित थे। इसी प्रकार महाभारत में सहदेव द्वारा दक्षिण भारत में सैन्य अभियान किए जाने के संदर्भ में उल्लेख मिलता है कि सहदेव के दूतों ने वहां स्थित यवनों के नगर को वश में कर लिया था।

संदर्भ ग्रन्थ

1. *द्विवेदी कपिल देव, संस्कृत साहित्य का इतिहास*
2. *वाल्मीकि रामायण*
3. *आदिपर्व 1/68–69*
4. *ऋग्वेदः उषस् सूक्त*
5. *संस्कृत शास्त्रों का इतिहास (वाराणसी 1969 पृष्ठ 416)*
6. *राजशेखर, सूक्तिग्रन्थ*
7. *पतंजलि, महाभाष्य 4–2–65*
8. *आचार्य उपाध्याय बलदेव संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 137, 138*
9. *उपाध्याय गुप्त साम्राज्य का इतिहास – 2 पृष्ठ 100*
10. *ए0ए0 मैक्डोनेलः ए हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर पृ0 343*

REFERENCES

1. Dwivedi Kapil Dev, Sanskrit Sahitya ka Itihaas
2. Valmiki Ramayan
3. Adiparv 1/68-69
4. Rigved Usas Sukta
5. Sanskrit Shastron ka Itihaas (Varanasi 1969 pg 416)
6. Rajshekhar, Suktigranth
7. Patanjali, Mahabhashya 4-2-65
8. Acharya Upadhyay Baldev, Sanskrit Sahitya ka Itihaas, pg 137, 138
9. Upadhyay Gupt Samrajya ka Itihaas-2, pg 100
10. A.A. Macdonald: A History of Sanskrit Literature, pg 343